रामायण में जीवनमूल्य

— सत्यव्रत शास्त्री

आज से कुछ ही दिन बाद दीपावली महोत्सव है। इसका आरम्भ कब और किस कारण हुआ इससे सम्बद्ध अनेक कथानकों में से एक का सम्बन्ध श्री राम से है। वे वनवास समाप्त कर जब अयोध्या वापिस आये थे तो अयोध्यावासी आनन्दोल्लास में मग्न हो गये थे। सहस्रों दीपकों की प्रभा से नगरी जगमगा उठी थी। उसी की स्मृति में प्रतिवर्ष यह उत्सव मनाया जाता है।

श्री राम अयोध्यावासियों के प्रिय थे। उनके असाधारण गुणों पर वे मुग्ध थे। अपने पिता के वचन की मर्यादा रखने में जो तत्परता और दृढ़ता उन्होंने दिखाई, केवल उससे ही नहीं, उसके पूर्व भी उनका महिमामण्डित व्यक्तित्व उनके मन-प्राण पर छाया हुआ था। उन्होंने अपने आचार और व्यवहार को इस प्रकार ढाला हुआ था कि वे जनता के आदर्श बन गये थे। उनके हर काम में एक मर्यादा रहती थी। इसी कारण वे मर्यादापुरुषोत्तम कहलाये।

उन श्री राम के चरित का बखान किया महर्षि वाल्मीकि ने। जिसके लिये उन्हें निर्देश किया स्वयं भगवान् ब्रह्मा ने जो अकस्मात् उनके आश्रम में अवतरित हो गये थे। लोकपितामह सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी ने वाल्मीकि जी से कहा कि आप भगवान् श्रीराम के सम्पूर्ण — आद्योपान्त चरित का वर्णन कीजिये — धर्मात्मा

रामस्य चरितं कृत्स्नं कुरु त्वमृषिसत्तम।
धर्मात्मनो भगवतो लोके रामस्य धीमतः॥

उन्हीं भगवान् ब्रह्मा के आदेश का पालन करते हुए महर्षि वाल्मीकि ने श्री राम के चरित का गान श्रीरामायण महाकाव्य द्वारा किया।

जब श्री राम जीवनमूल्यों के प्रतीक हैं तो उनके जीवन-वृत्त पर आधारित कृति रामायण में जीवनमूल्यों का चर्चित होना यह स्वाभाविक है।

श्री रामायण में जीवनमूल्यों के वर्णन का आरम्भ श्रीराम के गुणों के वर्णन से होता है। कथानक इस प्रकार है —

नारद मुनि श्री महर्षि वाल्मीकि के आश्रम आगमन ... कहलाते हैं।

~~रामायण में मानवमूल्य~~

[रामायण में मानवमूल्यों के प्रतिपादन का इससे बढ़कर और क्या ~~सत्यव्रत शास्त्री~~ निदर्शन हो सकता कि महर्षि वाल्मीकि को ~~...~~ धीरोदात्त के चरित का गान का निर्देश भगवान् ब्रह्मा की ओर से किया गया वे स्वयं में मानवमूल्यों के प्रतीक हैं।] नारदमुनि का जब महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में आगमन होता है तो महर्षि उनसे पूछते हैं कि इस समय, साम्प्रतम्, इस लोक में कौन ऐसा है – (को न्वस्मिन् साम्प्रतं लोके) जो गुणवान् है, वीर्यवान् है, धर्म की जिसे जानकारी है, जो कृतज्ञ है, जो सच्ची बात कहता है, जो अपने नियम का पक्का है (x) – गुणवान् कश्च वीर्यवान्, धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः, आत्मवान् को जितक्रोधो द्युतिमान् कोऽनसूयकः कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे

(x) जो ऐसे अपने पर वश है, जिसने क्रोध पर वश पा लिया है, जिसमें चमक है, जो ईर्ष्या-द्वेष से रहित है, और ~~...~~ युद्ध में जब रोष के आवेश में होता है तो देवताओं को भी डर लगने लगता है।

महर्षि वाल्मीकि नारदमुनि से कहते हैं कि आपको इस प्रकार की विभूति की जानकारी हो सकती है। आपको तीनों लोकों में जो कुछ होता है उस सबका पता है। इस पर नारदमुनि का कहना है कि महर्षि, जिन गुणों का आपने उल्लेख किया है वे दुर्लभ हैं। मैं सोच विचार कर उस नरश्रेष्ठ का वर्णन करूंगा जिसमें वे गुण हैं। और वह नरश्रेष्ठ है इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न महात्मा श्रीराम। इसके बाद प्रारम्भ हो जाती है नारदमुनि द्वारा उनके गुणानुकीर्तन की वाग्धारा। जिन गुणों का वे उस नरश्रेष्ठ में वर्णन करते हैं उनकी संख्या ~~अधिक है~~ अड़सठ है। वाल्मीकि ने तो अपनी जिज्ञासा में सोलह गुणों का ही उल्लेख किया था और जानना चाहा था कि वे सोलह गुण उनके समय में किसी में हैं भी क्या। नारदमुनि बताते हैं कि श्रीराम ऐसी विभूति हैं जिनमें सोलह नहीं अड़सठ गुण हैं। इन गुणों में अनेक शारीरिक गुण भी हैं। मानव मूल्यों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण गुणों की संख्या भी इन गुणों में अधिक है। श्रीराम संयमी हैं, पराक्रमी हैं, एक चमक है उनमें, अपने पर वश है उन्हें, वे बुद्धिमान् हैं, नीतिकुशल हैं, प्रखर वक्ता हैं, धर्मज्ञ हैं, वचन के पक्के हैं, ज्ञानवान् हैं, पवित्र हैं मन उनका समाहित रहता है, अपने धर्म की वे रक्षा करने वाले हैं, अपने बन्धुजनों की वे रक्षा करते हैं, दैन्य उनमें नहीं है, जैसे नदियां समुद्र की ओर ही चली रहती हैं वैसे सज्जनों का तांता उनकी ओर लगा रहता है, वे (मन, वचन, कर्म से) श्रेष्ठ हैं, सभी को वे एक समान समझते हैं और भेदभाव उनमें नहीं करते हैं, वे गम्भीर हैं, धीर हैं, दानी हैं, सत्यभाषी हैं। [illegible]

गुणों का रामायण में तब भी उल्लेख हुआ है जब महाराज दशरथ ने राज सभा बुला कर अपनी वृद्धावस्था को देख कर श्रीराम को अपना उत्तराधिकारी बनाने का अपने मन्तव्य को प्रस्तुत किया था। वहां उन के अन्य गुणों के साथ उनके जिन दो गुणों का उल्लेख किया गया वे विशेषतः उल्लेख्य हैं। उनके विषय में कहा गया — मृदुपूर्वं च भाषते, श्रीराम मृदुभाषी हैं और पूर्वभाषी हैं अर्थात् बात करने में पहल करते हैं। उन्हें इसकी अपेक्षा नहीं है कि कोई दूसरा बात प्रारम्भ करे। वे अयोध्या के राजकुमार हैं इसका घमण्ड उन्हें नहीं है। वे स्वयं चलाकर कुशल प्रश्नादि करेंगे। विनय, इन्द्रियसंयम, धैर्य, औदार्य, स्वजन-वत्सलता, सत्यभाषण, वचनबद्धता, शौर्य, वीर्य, पराक्रम, बन्धुता आदि मानवमूल्यों के वे प्रतिमान हैं। यही कारण है कि उनका मार्ग अयन — राम + अयन, राम का मार्ग ही रामायण बन गया। और उनका राज्य सर्वोत्कृष्ट राज्यों, शासनतन्त्रों के कीर्तिमान के रूप माना जाने के कारण रामराज्य रूप में प्रतिष्ठित हो गया।

भारतीय संस्कृति को यदि किसी एक शब्द से परिभाषित किया जा सकता है तो वह है उसकी धर्मपरायणता। धर्म से तात्पर्य यहां किसी सम्प्रदाय विशेष से नहीं है न ही धर्म का रूढ़ से। धर्म वह है जिस पर समाज टिका है — धारणात् धर्म इत्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः। जिस पर समाज टिका है वह है मानव मूल्य समुदाय। इस समुदाय में दस मूलभूत तत्त्वों का मनु महाराज ने परिगणन किया है —

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ 6.92.

धैर्य, क्षमा, मानसिक सन्तुलन (विकार के साधन उपलब्ध होने पर भी मन में विकार न आने देना), अन्याय से किसी के धन या किसी की वस्तु का अपहरण न करना, (बाह्यशुद्धि,) इन्द्रियसंयम, तत्त्वज्ञान, आत्मज्ञान, सत्यभाषण, और क्रुद्ध न होना ये दस धर्म की पहिचान हैं। भारतीय परम्परा ने धर्म को जिसे मानवमूल्यों का पर्यायवाची कहा जा सकता है पर अत्यन्त बल दिया है। रामायण ने धर्म को संसार का सार तक कह डाला है —

धर्मादर्थः प्रभवति धर्मात्प्रभवते सुखम्।
धर्मेण लभते सर्वं धर्मसारमिदं जगत्॥ 3.9.30.

धर्म से (व्यक्ति) अर्थ अर्थात् धन-दौलत प्राप्त करता है, धर्म से वह सुख प्राप्त करता है, धर्म से उसे सब कुछ हासिल होता है। धर्म इस संसार का सार है।

धर्म का पहला लक्षण धृति धैर्य बताया गया है। विषम से विषम परिस्थितियों को झेल जाना और धर्म के पथ पर डटे रहना, दम, आत्मसन्तुलन, बनाये रख कर उन्हें पार कर जाना ही धैर्य है। विकार का कारण रहते हुए भी जिनमें विकार नहीं आता, जो उद्विग्न अथवा उत्तेजित हो कर अपना आपा नहीं खोते हैं वे धीर हैं। महाकवि कालिदास ने [illegible] धीर की परिभाषा ही दे दी है।

विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।

हैं, शोकाकुल हो जाते हैं। फिर अपने को संभालते हैं। शोक को (सीता हरण के कारण बड़ा आघात ... से जाते) ... सर्वार्थाः (किष्किन्धाकाण्ड 4.27.34) शोक करने वाले के सभी कार्य नष्ट हो जाते हैं। इसीलिए शोक को मन में न रखकर वे उत्साह से नये सहयोगियों की तलाश में लग जाते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि उत्साही व्यक्ति इस संसार में अत्यन्त दुःसाध्य कार्यों में हताश नहीं होते — उत्साहवन्तो हि नरा न लोके सीदन्ति कर्मस्वतिदुष्करेषु (अरण्यकाण्ड, 3.63.19).

मानव मूल्यों में एक क्षमा भी है जिसे ऊपर निर्दिष्ट धर्म के दस लक्षणों में दूसरे स्थान पर रखा गया है। संस्कृत की प्रसिद्ध उक्ति है - शक्तानां भूषणं क्षमा (समर्थ अर्थात् अपराध करने वालों को दण्ड देने में समर्थ होने पर भी जो दण्ड नहीं देते और उन्हें क्षमा कर देते हैं क्षमा उनका आभूषण है। रावण वध के पश्चात् जब हनुमान् श्रीराम के विजय का समाचार देने सीता जी के पास अशोक वाटिका में जाते हैं और उनसे कहते हैं कि जो आपको घेरे रहने वाली क्रूर राक्षसियों ने आपको तरह-तरह के कष्ट दिये, आपको कटु वचन कहे उन्हें मैं दण्ड देना चाहता हूँ तो सीता जी कहती हैं: राजाश्रित, वशंवद इन दासियों पर क्या क्रोध करना। मैं इन दासियों को क्षमा करती हूँ दासीनां रावणस्याहं मर्षयामि (युद्धकाण्ड, 113.39)। इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए वे कहती हैं कि अपराध किससे नहीं होता। ये राक्षसियाँ चाहे पापिनियाँ हों, अशुभ हों, वध के योग्य हों तो भी इन पर करुणा ही करनी चाहिये —

पापानां वा शुभानां वा वधार्हाणामथापि वा।
कार्यं कारुण्यमार्येण न कश्चिन्नापराध्यति ॥ (युद्धकाण्ड, 113.43)

सच बोलना एक बहुत बड़ा मानव मूल्य है। शास्त्र में तो यहां तक कहा गया है कि सत्ये धर्मः प्रतिष्ठितः, सत्य पर धर्म टिका है। [illegible] कह कर सत्य में और भगवान् में अभेद स्थापित कर दिया गया है। तैत्तिरीय उपनिषद् में जब ब्रह्मचारी अध्ययन समाप्त करके गुरु से विदा लेने को होता है तो गुरु उसे उपदेश देता है — आचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति - सत्यं वद, सच बोलना, सत्यान्न प्रमदितव्यम्, सत्य में कभी प्रमाद न करना। सत्य की इस महिमा को पद्मपुराण ने भी प्रतिष्ठित किया है जहां यह कहा गया है कि यदि तराजू के एक पलड़े में सत्य को रखा जाये और दूसरे में हजार अश्वमेधों को तो सत्य वाला पलड़ा ही भारी पड़ेगा —

अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम्।
अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेव विशिष्यते॥ (5.18.403)

कृतज्ञता पर भी रामायण में बहुत बल है। वहां स्पष्ट कहा गया है कि उपकार का बदला अवश्य चुकाना चाहिये यही सनातन नियम है — कृते च प्रतिकर्तव्यमेष धर्मः सनातनः (सुन्दरकाण्ड, 1.106). रामायण में कृतघ्न व्यक्ति को बहुत निकृष्ट माना गया है। गोहत्या करने वाले, सुरापान करने वाले, चोर, व्रतभंग करने वाले इन सभी के लिये प्रायश्चित्त का विधान है, कृतघ्न का कोई प्रायश्चित्त नहीं है —

गोघ्ने चैव सुरापे च चौरे भग्नव्रते तथा।
सर्वस्य निष्कृतिः प्रोक्ता कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः॥
(किष्किन्धाकाण्ड, 34.12)

क्रोध पर वश पा लेना एक उत्तम मानव मूल्य है। धर्म के दस लक्षणों में इसे भी परिगणित किया गया है। रामायण कहती है कि जो अपनी विवेक बुद्धि से मन में उठे क्रोध को प्रज्वलित अग्नि पर पानी डाल देने के समान, काबू पा लेते हैं वे धन्य हैं —

धन्याः खलु महात्मानो ये बुद्ध्या कोपमुत्थितम्।
निरुन्धन्ति महात्मानो दीप्तमग्निमिवाम्भसा॥
(सुन्दरकाण्ड, 55.3)

क्रोध में आकर मनुष्य क्या नहीं कर जाता। वह भूल जाता है कि उसे क्या करना चाहिये, क्या नहीं। क्रुद्ध के लिये कोई भी अकार्य नहीं है, कुछ भी अवाच्य नहीं है —

वाच्यावाच्यं प्रकुपितो न विजानाति कर्हिचित्।
नाकार्यमस्ति क्रुद्धस्य नावाच्यं विद्यते क्वचित्॥ (सुन्दरकाण्ड, 55.5)

रामायण में माता, पिता और आचार्य को गुरु कहा गया है। इनका तिरस्कार न करने का कड़ा निर्देश है।

प्राचीन काल से ही भारतीय परम्परा में दान को विशेष महत्त्व दिया गया है पर यहां इस पर विशेष ध्यान दिया गया है कि किसी पर उपकार कर रहे हैं इस भाव से दान न दिया जाय क्योंकि इससे दूसरे के आत्मसम्मान को ठेस लग सकती है। इसी आशय से उपनिषद् में कहा गया है — श्रद्धया देयम्, अश्रद्धया अदेयम्, आदरपूर्वक देना चाहिये, निरादरपूर्वक नहीं। रामायण में भी निम्न पद्य में यही भाव है —

अवज्ञया न दातव्यं कस्यचिल्लीलयापि वा।
अवज्ञया कृतं हन्याद् दातारं नात्र संशयः॥ (बालकाण्ड, 33-34)

तिरस्कार भाव से दान नहीं देना चाहिये और नहीं खेल-खेल में। अवज्ञा पूर्वक दिया गया दान निःसन्देह देने वाले को नष्ट कर देता है।

सम्पूर्ण रामकथा मानव मूल्यों का निदर्शन है। इसमें पिता के वचनों का पालन, भाई-भाई के परस्पर स्नेह, बन्धुजनों के प्रति सौहार्द, कुल अनुशासन और शत्रु के प्रति सद्भाव, मानव वत्सलता आदि अनेक मानव मूल्यों का उद्घाटन हुआ है। ~~मानव मूल्यों की दृष्टि से~~ इस दृष्टि से इसका अध्ययन, श्रद्धाया एवं मनन ~~उन मूल्यों को हृदयङ्गम~~ ~~[illegible]~~ में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।